'बाल-चिंतन'

व

'बाल-फ़िल्म समीक्षा'

(प्रस्तोता/समीक्षक)
प्रशान्त अग्रवाल
सहायक अध्यापक
प्राथमिक विद्यालय डहिया
विकास क्षेत्र : फतेहगंज पश्चिमी
जनपद : बरेली

'अनुक्रमणिका'

'बाल-चिंतन'

1. बच्चे की खोज ने चौंकाया
2. बच्चे की कल्पनाशीलता
3. बच्ची से मिला idea
4. उत्तर में छात्रा का मौलिक प्रश्न
5. तालिब की लगन

'बाल-फ़िल्म समीक्षा'

1. केशु
2. भागो भूत
3. अनोखा अस्पताल
4. The Goal (हिंदी)
5. मुस्कान (animated)

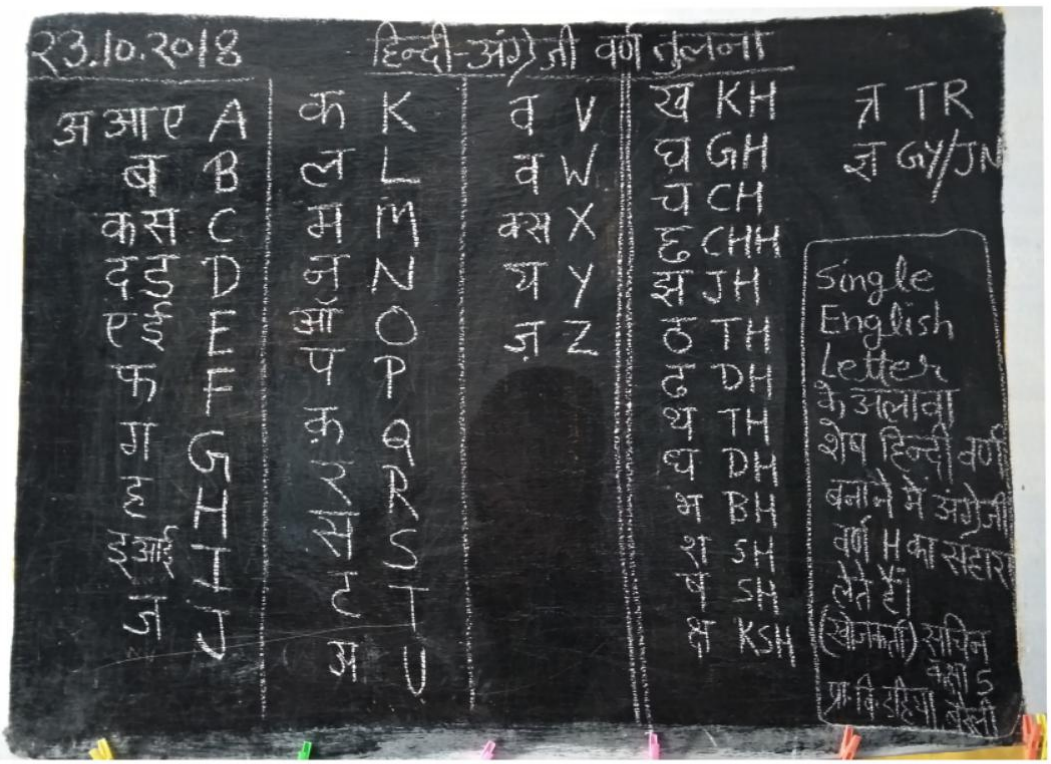

बच्चे की खोज ने चौंकाया

अनेक बार बच्चे चौंका देते हैं।

आज ऐसे ही अंग्रेज़ी-हिंदी वर्णों की ध्वनि-तुलना पर चर्चा करते समय कक्षा 5 के एक बच्चे सचिन ने ध्यान दिलाया कि एक letter वाली ध्वनियों को छोड़कर शेष सभी ध्वनियों में h का सहारा लेना पड़ता है। अपवादों को छोड़कर बात सत्य थी। जैसे श को sh, भ को bh, ध को dh...

शायद सुधी साथी इस बात को पहले से जानते हों लेकिन मैंने इस दृष्टि से पहली बार गौर किया। और बच्चे ने तो निःसंदेह स्वयं ही इसका शोध किया।

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, प्रा.वि. डहिया, बरेली, उ.प्र.)

बच्चे की कल्पनाशीलता

अक्सर ही बच्चों से कहने में आता है कि 'किताब में लिखा है' सिर्फ इसीलिए किसी बात को सही न मान लिया करो, हो सकता है कि तुम किताब से भी आगे जाकर गहरी सच्चाई खोज लो। आज (7.12.18) उक्त बात एक बच्चे ने सिद्ध भी कर दी।

मैं कक्षा 5 में 'The sun and the wind' पाठ पढ़ा रहा था। सभी साथी जानते होंगे कि उसमें अंत में सूरज हवा से जीत जाता है क्योंकि वही अपनी गर्मी से आदमी का कोट उतरवा पाता है।

पूरी कहानी सुनकर एक छात्र सचिन बोला कि "अगर कोट पहनवाने का मुक़ाबला हो, तो कौन जीतेगा?"

और मैं विचार को बाध्य हो गया कि हाँ, तब तो हवा ही जीत जायेगी।

और फिर इसी बहाने बहुत सी बातें, उदाहरण, किस्से कहकर यही निष्कर्ष निकाला गया कि दुनिया में हर चीज़ का अपने-अपने स्थान पर अपना-अपना unique महत्त्व है।

लेकिन उक्त में प्रमुख लगा, बच्चे की कल्पनाशीलता की उड़ान..... और इसी बहाने बही 'दर्शन की गंगा'.....

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, प्राथमिक विद्यालय डहिया, बरेली, उ.प्र.)

बच्ची से मिला Idea

एक दिन प्रार्थना सभा के दौरान मैंने देखा कि कक्षा 3 की छात्रा शमीम बानो नमाज पढ़ने की 'हस्तमुद्रा' में प्रार्थना कर रही है, जबकि प्रायः मुस्लिम बच्चे हाथ जोड़ने की बजाय हाथ बाँधकर खड़े होते हैं।

और जब प्रार्थना सभा के बाद मैंने सभी मुस्लिम बच्चों के सामने प्रतिदिन ऐसा करने का प्रस्ताव रखा, तो वे भी सहर्ष तैयार हो गये।

हाथ बाँधकर खड़े होने की अपेक्षा मुझे यह उत्तम विकल्प लगा।

एक बात और, जब मैंने इस idea के लिए सबके सामने शमीम बानो की प्रशंसा की तो (शायद) पहली बार शमीम बानो ने प्रार्थना सभा में कुछ कहने की इच्छा जतायी और बोली (उत्साहवर्धन का प्रत्यक्ष प्रमाण)।

(प्राथमिक विद्यालय डहिया, बरेली, उ.प्र.)

उत्तर में छात्रा का मौलिक प्रश्न

एक दिन बाल सभा में बच्चों को यक्ष और युधिष्ठिर की कहानी सुनाते समय यक्ष के एक प्रश्न का उत्तर बच्चों से पूछा कि 'संसार का सबसे बड़ा आश्चर्य क्या है?'

तो जवाब में कक्षा 5 की छात्रा खुशी बोली, "हमें सपने क्यों आते हैं?"

बाद में उन्हें युधिष्ठिर का उत्तर भी बताया, "संसार में लोग सबको मरता हुआ देखते हैं, फिर भी ऐसे जीते हैं, मानों कभी मरेंगे ही नहीं।"

मुझे तो खुशी के उत्तर से बहुत खुशी हुई, क्या आपको हुई?

(प्राथमिक विद्यालय डहिया, बरेली, उ.प्र.)

तालिब की लगन

इनसे मिलिए,
ये हैं 'मास्टर' तालिब,
उत्साह से लबरेज़,
बुद्धि के बहुत तेज।

जब भी किसी कार्यवश,
मैं कक्षा से बाहर निकलता हूँ,
ये जनाब मोर्चा संभाल लेते हैं;
और वो भी commanding pose में।

यहाँ तक कि,
कई बार तो
interval में ही ये दुकान सजा लेते हैं।

ऐसी ही दो संक्षिप्त नज़ारे
एक pic, एक वीडियो के सहारे।
खिला रहे हैं खेल 'झपट्टा-मार'
पढ़ाई का खेल से जोड़ रहे हैं तार

तालिब, कक्षा 2,
प्राथमिक विद्यालय डहिया,
वि.क्षे. फतेहगंज पश्चिमी,
बरेली, उ.प्र.
(प्रस्तुति : प्रशान्त)

केशु

(एक मार्मिक/प्रेरक बाल फ़िल्म)

यह कहानी है केशु नाम के एक ऐसे मूक-बधिर बच्चे की, जो रचनात्मक कला-प्रतिभा का धनी है, लेकिन समाज की उपेक्षा के कारण वह थोड़ा विद्रोही स्वभाव का हो गया है। मातृ-पितृविहीन केशु अपने मामा के साथ रहता है।

ऐसे में उसके गाँव में एक शिक्षिका आती हैं, जो केशु के ही घर में किरायेदार के रूप में रहती हैं।

शुरू में केशु उन्हें भी परेशान करता है लेकिन शीघ्र ही वे शिक्षिका अपने प्यार से न केवल केशु का विश्वास जीत लेती हैं बल्कि उसके गुणों को उभारकर उसकी प्रतिभा को दुनिया के समक्ष लाती हैं, उसकी खुशी और आत्मविश्वास को नये पंख प्रदान करती हैं। लेकिन अचानक एक दिन जब शिक्षिका को जाना होता है, तब.....

फ़िल्म की विशेषता हैं भावनाओं और परिस्थितियों के वे मार्मिक चित्रण, जो एक संवेदनशील व्यक्ति की आंखों को सहज ही नम कर देंगे।

साथ ही यह फ़िल्म एक शिक्षक को प्रेरित करती है कि वह उपेक्षा के शिकार किसी बच्चे के प्रति कितना संवेदनशील और सहानुभूतियुक्त होकर व्यवहार करे।

और दूसरी ओर उपेक्षित/वंचित बच्चों में यह फ़िल्म एक भरोसा भी पैदा करती है कि खुला आसमान उनका भी इंतज़ार कर रहा है।

मूलतः मलयालम भाषा की इस फ़िल्म को श्रेष्ठतम बाल फ़िल्म का राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार भी मिला है।

(समीक्षा-प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली)

भागो भूत

(मार्मिक बाल फ़िल्म)

यह कहानी है एक बहुत ही सुलझे-समझदार बच्चे 'नानू' और सुनसान उजाड़ में रहने वाले उसके अधेड़ उम्र दोस्त 'भागो' की, जिसे लोग अनजाने में ही भूत मान बैठे हैं। एकांत में रहने के इच्छुक इस 'भूत' के हाथों जब-जब ग्रामीणों का भला होता है तो उसका माध्यम बनता है 'नानू' और पूरा गाँव नानू को ही हीरो मानने लगता है।

लेकिन अंततः स्वाभिमानी नानू को अपनी यह अनुचित तारीफ चुभने लगती है और वह 'भूत' के मना करने के बावजूद सबको सच्चाई बता देता है, लेकिन लोगों के वहाँ पहुँचने से पहले ही 'भूत' .....

पर, अंत में जब नानू को 'भूत' की असलियत पता चलती है तो वह भी हक्का-बक्का रह जाता है, और बड़ी मासूमियत से उसे पुकारता है। क्या थी 'भूत' की हक़ीक़त?... क्या 'भूत' लौटता है?....

यह मार्मिक कहानी दिखाती है :

* निश्छल-मासूम हृदय में औरों को जीतने की सामर्थ्य।

* समाज की व्यावहारिक लेकिन कटु सच्चाइयाँ।

फ़िल्म में बच्चे का चेहरा बहुत साधारण लेकिन उसकी चैतन्य जीवंतता उतनी ही असाधारण है जो दिखाती है कि भीतरी खजाने के आगे ऊपरी आवरण कितना तुच्छ होता है।

और असली अहसास तो यह समीक्षा पढ़कर नहीं, फ़िल्म देखने से ही होगा....

(समीक्षक : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

'अनोखा अस्पताल'

(संवेदनशीलता की पोषक रोचक बाल फ़िल्म)

जंगल, हाथी आदि जानवर, प्यारी दादी, जासूसी का रोमांच, और सुखद अंत; एक प्रभावी बाल फ़िल्म के सभी आवश्यक तत्त्व इसमें मौजूद हैं।

फ़िल्म की कहानी एक डॉक्टर की वृद्धा माँ के इर्द-गिर्द घूमती है जिन्होंने अपना जीवन बेज़ुबानों की देखभाल को समर्पित कर दिया है। उनका पोता शहर से आता है अपनी दादी के जंगल वाले घर में, जहाँ वो चलाती हैं एक अनोखा अस्पताल। लेकिन जंगल में घुसे हैं कुछ शिकारी..

क्या वो शिकार कर पायेंगे? पकड़े जायेंगे या उनका हृदय बदलेगा?

जंगल के दृश्य और मासूम-प्यारे जज़्बाती रिश्ते दर्शक को बाँधे रखते हैं।

फ़िल्म की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें जानवरों के प्रति आत्मीयता का इतना मार्मिक फिल्मांकन है कि वह संवेदनशीलता के सतही उपदेश से भी कई गुना अधिक प्रभावी बनकर बच्चों के अंतर्मन में सहज ही पशुओं के प्रति सहानुभूति विकसित करने की क्षमता रखता है।

(समीक्षक : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

The Goal (हिंदी)

(अनेकानेक संदेश देती फ़िल्म)

यह कहानी है एक फुटबॉल कोच की, जिसे अमीरों के एक क्लब ने एक खास टूर्नामेंट के लिए अपने बच्चों की टीम को प्रशिक्षित करने के लिए मानदेय पर नियुक्त किया है।

प्रशिक्षण के दौरान कोच को मैदान में एक गरीब लेकिन फुटबॉल का धुरंधर बच्चा मिलता है, जिसको वो अपनी टीम में खिलाना चाहते हैं लेकिन उस बच्चे की गरीबी, जाति, और उसके पिता की आपराधिक पृष्ठभूमि के कारण क्लब के सदस्य दबाव डालकर उसे अपने क्लब से नहीं खेलने देते।

तब संवेदनशील कोच उसकी प्रतिभा को बचाने के लिए उसे एक अन्य टीम से खिलाने की व्यवस्था करते हैं, लेकिन संयोग से उसी टीम से इनकी अपनी टीम का फाइनल मुकाबला हो जाता है। मुक़ाबला कौन जीतता है? क्या बच्चा खुद को साबित कर पाता है? कोच का क्या होता है?

इनसे भी अधिक महत्त्वपूर्ण सवाल यह है कि इस फ़िल्म को आखिर देखा क्यों जाये?

यह मार्मिक फ़िल्म ज़रूर देखें और दिखायें क्योंकि इसे देखकर :

* बच्चा जात-पाँत के भेदभाव को कुरीति मानकर खुद ऐसा भेदभाव नहीं करने को प्रेरित होगा।

* बच्चा गरीब या आपराधिक माहौल में पले-बढ़े बच्चों के प्रति सहानुभूति रखेगा।

* स्वयं गरीब या प्रतिकूल पृष्ठभूमि का होने पर उस बच्चे में भी कुछ कर गुजरने का उत्साह पैदा होगा।

इसके अतिरिक्त फ़िल्म में स्वाभिमान, परोपकार आदि मानवीय मूल्य भी पिरोये गये हैं, जो बच्चों/बड़ों सभी को कुछ बेहतर बनाने की क्षमता रखते हैं।

(समीक्षक : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)

मुस्कान

आज बच्चों को लैंगिक समानता पर आधारित 20 मिनट की एक लघु animation फ़िल्म 'मुस्कान' projector पर दिखायी।

फ़िल्म की विशेषताएं :

* दिलचस्प कहानी
* खलनायक-विहीनता
* आकर्षक दृश्य-रंग संयोजन
* अत्युत्तम sound quality
* कुल मिलाकर बेहद प्रभावी प्रस्तुति

फ़िल्म का संदेश पूछने पर बच्चों के उत्तर :

1. लड़का-लड़की में भेदभाव नहीं करना चाहिए।
2. लड़कियाँ लड़कों से कम नहीं होतीं।
3. लड़कियाँ लड़कों से आगे हैं।

.... और मेरी नज़र में सर्वश्रेष्ठ उत्तर है, फ़िल्म का ही एक संवाद,

"दोनों में तुलना करना ही गलत है।"

और आपका जवाब.....?

कुछ भी हो, फ़िल्म <u>अवश्य दर्शनीय</u> है।

(प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.)